कल्पना की कल्पना

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

पारूल शर्मा, कक्षा 7
आर्य कन्या इण्टर कालेज, रूड़की ।

कल्पना था नाम उसका, कल्पना में खो गई !
कल्पना की कल्पना कर, कल्पना में सो गई !

कल्पना के आँचल में, कल्पना बनकर खो गई !
थी चाँद को छूने की इच्छा, वह अधूरी रह गई !

कल्पना के आगोश में, इस कदर डूबी थी वो !
खुद को भी पता न चला, कब सदा के लिए सो गई वो !

कोलंबिया में सवार होकर, वो अंतरिक्ष की दीवानी हो गई!
क्या खबर थी स्वयं को, वो कब बेगानी हो गई !

नासा को देना चाहती थी, आसमान की बुलंदियाँ!
पर उसके ख्वाब की पखुडियाँ, पल भर में पुरानी हो गई !

भारत में था दुःख का आलम, विश्व भी गमगीन था !
प्रकृति भी रोई थी उस दिन, दुःख बड़ा संगीन था !

करनाल की वो बेटी थी, नासा से उड़कर जो गई !
छू न सकी वो धरती को, आसमान में खो गई !

कल्पना था नाम उसका, कल्पना में खो गई !
कल्पना की कल्पना कर, कल्पना में सो गई !

ना, कल्पना में खो गई !
कल्पना की कल्पना कर, कल्पना में सो गई !

कल्पना के आँचल में, कल्पना बनकर खो गई !
थी चाँद को छूने की इच्छा, वह अधूरी रह गई !

कल्पना के आगोश में, इस कदर डूबी थी वो !
खुद को भी पता न चला, कब सदा के लिए सो गई वो !

कोलंबिया में सवार होकर, वो अंतरिक्ष की दीवानी हो गई!
क्या खबर थी स्वयं को, वो कब बेगानी हो गई !

नासा को देना चाहती थी, आसमान की बुलंदियाँ!
पर उसके ख्वाब की पखुडियाँ, पल भर में पुरानी हो गई !

भारत में था दुःख का आलम, विश्व भी गमगीन था !
प्रकृति भी रोई थी उस दिन, दुःख बड़ा संगीन था !

करनाल की वो बेटी थी, नासा से उड़कर जो गई !
छू न सकी वो धरती को, आसमान में खो गई !

कल्पना था नाम उसका, कल्पना में खो गई !
कल्पना की कल्पना कर, कल्पना में सो गई !